International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 05-11-2024, Accepted: 06-12-2024, Published: 21-12-2024
Volume 10, Issue 4, 2024, Page No. 62-64

मुक्तिबोध की कविता 'अंधेरे में' 'यथार्थ व संघर्श की एक गाथा'

डॉ. बेनज़ीर
Department of Hindi, JNU, New Delhi, India

सारांश
हिन्दी कविता के क्षेत्र में गजानन माधव मुक्तिबोध ऐसे व्यक्तित्व के रूप में दिखाई देते है जिनका सम्पूर्ण जीवन ही यथार्थ एवं संघर्ष की एक गाथा है। तारसप्तक के कवियों में अज्ञेय और गिरिजाकुमार माथुर के बाद मुक्तिबोध का नाम अधिक महत्वपूर्ण है। मुक्तिबोध ने जिस प्रकार का जीवन जिया ठीक उसी प्रकार अपने जीवन के सम्पूर्ण अनुभव को लेखबद्ध भी किया जिसका प्रमाण मुक्तिबोध की रचना 'अंधेरे में' है। मुक्तिबोध की अन्य प्रमुख कृतियाँ जैसे चाँद का मुह टेढ़ा है, काठ का सपना, विपात्र और सतह से उठता आदमी, कामायनीः एक पुनर्विचार, भारतीय इतिहास और संस्कृति, नयी कविता का आत्मसंघर्ष तथा अन्य निबन्ध, नये साहित्य का सौन्दर्य–शास्त्र है। इनमें विशेष ख्याति यदि किसी रचना को मिली है तो वह कविता है 'अंधेरे में'। यह श्रीकांत वर्मा द्वारा संपादित मुक्तिबोध के प्रथम काव्य संग्रह 'चाँद का मुंह टेढ़ा है' (1964) में संकलित अन्तिम कविता है, जिसे उत्तर छायावाद की महत्वपुर्ण काव्य कृति माना जाता है। मुक्तिबोध अपने काव्य की यात्रा में शुरू से ही चिंतनशील रहे है इसलिए इनकी रचना पाठक के समक्ष विभिन्न अर्थ खोलती है। जिससे पाठक वर्ग मुक्तिबोध की रचना को विभिन्न अथों एवं निष्कर्षों के आधार पर देखने की कोशिश करता है। मुक्तिबोध को समझना अंधेरे में दीपक दिखाने जैसा है। यही प्रमुख विशेषता मुक्तिबोध को अन्य कवियों तथा लेखकों से अलग करती है।

मूल शब्दः कविता, मध्यमवर्गीय समाज, अस्मिता का संकट, कुण्ठा निराशा, द्वन्द्व परमअभिव्यक्ति, राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्धता, यथार्थ, वर्ग–संघर्ष

हिन्दी कविता के क्षेत्र में गजानन माधव मुक्तिबोध ऐसे व्यक्तित्व के रूप में दिखाई देते है जिनका सम्पूर्ण जीवन ही यथार्थ एवं संघर्ष की एक गाथा है। तारसप्तक के कवियों में अज्ञेय और गिरिजाकुमार माथुर के बाद मुक्तिबोध का नाम अधिक महत्वपूर्ण है। मुक्तिबोध ने जिस प्रकार का जीवन जिया ठीक उसी प्रकार अपने जीवन के सम्पूर्ण अनुभव को लेखबद्ध भी किया जिसका प्रमाण मुक्तिबोध की रचना 'अंधेरे में' है। मुक्तिबोध की अन्य प्रमुख कृतियाँ जैसे चाँद का मुह टेढ़ा है, काठ का सपना, विपात्र और सतह से उठता आदमी, कामायनीः एक पुनर्विचार, भारतीय इतिहास और संस्कृति, नयी कविता का आत्मसंघर्ष तथा अन्य निबन्ध, नये साहित्य का सौन्दर्य–शास्त्र है। इनमें विशेष ख्याति यदि किसी रचना को मिली है तो वह कविता है 'अंधेरे में'। यह श्रीकांत वर्मा द्वारा संपादित मुक्तिबोध के प्रथम काव्य संग्रह 'चाँद का मुंह टेढ़ा है' (1964) में संकलित अन्तिम कविता है, जिसे उत्तर छायावाद की महत्वपुर्ण काव्य कृति माना जाता है। मुक्तिबोध अपने काव्य की यात्रा में शुरू से ही चिंतनशील रहे है इसलिए इनकी रचना पाठक के समक्ष विभिन्न अर्थ खोलती है। जिससे पाठक वर्ग मुक्तिबोध की रचना को विभिन्न अथों एवं निष्कर्षों के आधार पर देखने की कोशिश करता है। मुक्तिबोध को समझना अंधेरे में दीपक दिखाने जैसा है। यही प्रमुख विशेषता मुक्तिबोध को अन्य कवियों तथा लेखकों से अलग करती है।

मुक्तिबोध एक प्रगतिशील कवि होने के कारण समाज में मध्यमवर्ग की पीड़ा को जिस प्रकार से अभिव्यक्त किया है इसकी बेज़ोड़ अभिव्यक्ति इस कविता में देखने को मिलती है। इसके सन्दर्भ में सुमनिका सेठी का कहना है कि'' कवि मुक्तिबोध के मध्यवर्गीय मन की वर्ग मुक्ति कामी छटपटाहट और संघर्ष स्वप्नों के इतिहास की वाचक होने के साथ ही यह कविता अपने प्रखर सामाजिक अन्तर्दृष्टि और सरकारों के कारण भी मुल्यवान है। तभी तो वह एक नयी परिवर्तित चेतना एवं सारतत्व की की कौंध देती है और दिखाती है भविष्य का सुनहला नक्शा। साहित्य समिक्षकों ने सर्वसम्मति से इसे देश के 'आधुनिक जन–इतिहास का दहकता इस्पाती दस्तावेज़' माना है।''[1] मुक्तिबोध ने मध्यवर्ग को हमेशा प्रगतिशील तत्वों से जोड़ने का प्रयास किया ये स्वयं कहते है – ''ये सारे अतीत के प्रभाव, कभी कभी वेदना संताप के शिखर पर प्रोत्साहित करते हैं। ज्यों ज्यों मैं उन्हें लिपिबद्ध करता जाऊँगा, वे अधिक गंभीर, अधिक संगत होते जाएँगे।''

सन् 13 नवम्बर 1917 श्योपुर (ग्वालियर) में जन्में मुक्तिबोध कवि जीवन–वृत्त इनके व्यक्तित्व निर्माण का बाह्य उपादान है तथा इनका जीवन–दर्शन अभ्यान्तर उपादान। मुक्तिबोध मुख्य रूप से अन्तर्जीवी कलाकार थे। जीवन के यथार्थ से टकराते हुए इन्होंने साहसी जीवन जिया और अपने रचनाकार व्यक्तित्व को अपने युग जीवन की विद्रुपताओं, असंगतियों तथा मानवीय मुल्यों के विनाश और मानव मन को नियंत्रित एवं संतुलित करने के लिए अपने जीवन के आखिरी सांस तक निरन्तर संघर्षशील रहे कुंछ ऐसी ही अभिव्यक्ति इस कविता में इस रूप में हुई है– ''वह रहस्यमय व्यक्ति / अब तक न पायी गयी मेरी अभिव्यक्ति है / पूर्ण अवस्था वह / निज–सम्भावनाओं, निहित प्रभावों, प्रतिभाओं की,/मेरे परिपूर्ण का आविर्भाव, ...प्रश्न थे गम्भीर, शायद खतरनाक भी,/इसी लिए बाहर के गुंजान/ जंगलों से आती हुई हवा ने / फूक मारकर एकाएक मशाल ही बुझा दी–/ कि मुझको यों अंधेरे में पकड़कर /मौत की सजा दी।''

आज भूमण्डलीकरण तथा पूंजीवादी दौर में मध्यमवर्गीय समाज के सामने सबसे बड़ा संकट अस्मिता का संकट है। हर मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवी तबका अपनी अस्मिता की तलाश में लगा हुआ है। यहा तक की वर्तमान समय में सम्पूर्ण राष्ट्र के सामने आस्मिता का सवाल खड़ा हो गया है। परन्तु मुक्तिबोध ऐसे कवि जिन्होंने ऐसे सवाल पर प्रश्न चिन्ह लगाया। नामवर सिंह भी 'अंधेरे में' में आधुनिक मानव की ज्वलंतम समस्या 'अस्मिता की खोज' का साक्षात्कार करते हुए स्पष्ट करते हैं,'' कुछ अन्य व्यक्तिवादी कवियों की तरह इसमे किसी तरह की आध्यात्मिकता या रहस्यवाद नहीं हैं, बल्कि गली–सड़क की गतिविधि, राजनीतिक परिस्थिति और अनेक मानव चरित्रों की आत्मा के इतिहास का वास्तविक परिवेश है। .....अंधेरे में जो रोमांटिक स्वप्न है उसका आधार अपने युग में विकासमान उत्थानशील शक्तियों का बोध है।

कविता के अंतिम भाग में यह उत्थानशील शक्तियाँ क्रांति के लिए सन्नद्ध दिखाई पड़ती है। उस स्वप्न का रंग उस दुस्वप्न के कारण और भी निखर उठता है, जिसके मूल में ह्रासोन्मुखी शक्तियों की मृददल की शोभायात्रा है।''[2] इस कविता में आया हुआ ''मैं' शब्द ही वह एक व्यक्ति यानी मध्यमवर्ग का संवेदनशील बुद्धिजीवी वर्ग है जिसके कारण पुंजीवादी व्यवस्था के षड्यंत्र उनका यथार्थ तथा विसंगतियों का पता चलता है। ''अरे! अरे!! /तालाब के आस–पास अँधेरे में वन–वृक्ष /चमक–चमक उठते है हरे–हरे अचानक /वृक्षों के शीश पर नाच–नाच उठती हैं बिजलियाँ,/शाखाएँ, डालियाँ झूमकर झपटकर /चीख, एक दूसरे पर पटकती हैं सिर कि अकस्मात्–/ वृक्षों के अँधेरे में छिपी हुई किसी एक /तिलस्मी खोह का शिला–द्वार खुलता है धड् से .....घुसती है लाल–लाल मशाल अजीब–सी,/अनतराल–विवर तम में लाल–लाल कुहरा, कुहरे में सामने, रक्तालोक–स्नात पुरूष एक, रहस्य साक्षत!'' मुक्तिबोध ने कविता की शरूआत चुंकि रहस्यवादी रूप में की है जहां पर कवि का परम रूप रक्तालोक स्नात पुरूष हो गया है।

कवि ने मनुष्य के जीवन में द्वन्द की चरम स्थिति की व्याख्या की है 'अंधेरे में' कविता का नायक द्वन्दग्रस्त है उसके मन में एक छटपटाहट है जो गम्भीर वेदनापूर्ण सत्य को जानना चाहता है। वह प्रतिक्षा कर रहा है जो उस सत्य को कहने सुनने का साहस नहीं जुटा पा रहा है। फिर उसे याद आता है यह वही तो है जो मुझे तिलिस्म खोह में मिला था। वाचक का मन चाहता है कि उसे खींचकर अपने अन्दर समा ले तरन्तु उसके बीच में मध्यमवर्गीय मानसिक चेतना और समझौतापरस्ती उसके लिए अवरोध उत्पन्न करती है। इसी द्वन्द में देखते ही देखते वह रहस्यमय पुरूष जाता है वाचक जड़ बनकर वही खड़ा रहता है। इस प्रकार उसका यह आत्मसंघर्ष चलता ररहता है जो पीछा छोड़ने का नाम ही नहीं ले रहा है। ''क्या करूं, क्या न करूं, मुझे बताओ/ उस तम शुन्य में तैरती / जगत समीक्षा / की हुई उसकी /सह नहीं सकता ..... नहीं नहीं / अकेले मैं छोड़ नहीं सकूँगा, सहना पड़े मुझे चाहे जो भले ही ।'' अन्त में नायक अपने द्वन्द से बाहर निकलता है तथा निश्चय करता है कि भविष्य के लिए फिर से तत्पर रहुंगा उसके लिए चाहे जितना संघर्ष क्यों न करना पड़ें। ''मै उस ब्रह्म राक्षस का सजल उर शिष्य होना चाहता हूँ/ उसकी वेदना का श्रोत / संगत पूर्ण निष्कर्षों तक पहुँचा सकूँ।'' इस संदर्भ में अशोक वाजपेयी ''अंधेरे में' को मानव आस्था का दस्तावेज़ मानते है.... जहाँ मात्र तनाव–घिराव और छटपटाहट नहीं, इनसे मक्ति का सुनहरा सवप्न भी है– उसको ठोस रूप देने की आस्था भी। जहाँ मुक्तिबोध की दृष्दि आधुनिक जीवन की भयावह ता का अहसास प्रामाणिक और विशिष्ट बनाती है, वही उनकी उम्मीद उनके भय को अधिक मानवीय और विश्वसनीय कर देती है.... ।''[3]

मुक्तिबोध ने मनुष्य के मन में व्याप्त जिस त्रास, अशांति आदि की वास्तविकता का भान कराया है इसकी कलात्मक अभिव्यक्ति सहज ही देखने को मिलती है। अपनी अन्तर्मुखता से उबरने के पश्चात जब कवि बाहरी दुनिया से साक्षरकार करता है तो शोषकों का दंश देखकर हतप्रभ रह जाता है जिनके द्वारा समाज में फैलाये जा रहे भय, आक्रोश, षड़यंत्र के कारण आम जनता पीड़ित है, सड़के सेना से घिरी है, पत्तों तक के खड़कने पर पाबन्दी है। ऐसे में कवि का संवेदनात्मक ज्ञान स्वयं की अन्तरात्मा को टटोलने की कोशिश करता है। जिसके परिणामस्वरूप यह आतंक पलायन के लिए प्रवृत्त कारता है जैसे उसके पैर खुद ही भागने के लिए तत्पर हो रहे हो। ''बुद्धि की मेरी रग रग / गिनती है समय की धक–धक.... दम छोड़ रहे है भाग / गलियों में मरे पैर, सांस से सांस लगी हुई, जमाने की जीभ निकल पड़ी है, कोई मेरा पीछा कर रहा लगातार .....'' कवि ने समाज की ऐसी दोमुही सोच को बेपर्दा किया है। जिनकी रात के अंधेरे में तथा दिन के उजाले में प्रवृत्तियां किस प्रकार से भिन्न–भिन्न होती है उनको कवि ने नंगा देख लिया जिसके लिए उसको सजा मिलेगी और यह पूंजीवादी शोषक समाज जीने भी नहीं देगा। ''एकाएक टूट गया स्वप्न व छिन्न भिन्न हो गये /सब चित्र, जगते में याद आने लगा वह स्वप्न, फिर से याद आने लगे अँधेरे में चेहरे, और, तब मुझे प्रतीत हुआ भयानक गहन मृतात्माए इसी नगर की/हर रात जुलूस में चलती, परन्तु दिन में/ बैठती हैं मिलकर करती हुई षड्यंत्र/ विभिन्न दफ्तरों–कार्यालयों, केन्द्रों में, घरों में।/हाय, हाय! मैने उन्हें देख लिया नंगा, उसकी मुझे और सजा मिलेगी।''

राष्ट्र के प्रति कवि की जो प्रतिबद्धता है उसको लेकर कवि कितना चिंतित है मनुष्य अपने स्वार्थ से ऊपर नहीं उट पाता है उसके अन्दर से लोकहित, करूणा तर्क और बुद्धि जैसी चीजों को त्यागता जा रहा है। 'अब तक क्या किया /जीवन क्या जीया'। कवि की ये पंक्तियां निक्रिय पड़े मनुष्य को झकझोरने का काम करती है। ऐसी तीखी आलोचना एक तरह से वाचक को हिला कर रख देती है, उसकी यह आत्म–प्रताड़ना और आत्मालोचन उसे बेचौन करती रहती है जिसके परिणामस्वरूप वाचक का मन उपेक्षा, उत्पीड़ तथा अपराधबोध से भर जाता है उसे लगता है कि उसके इसी आलस्य या निक्रियता के कारण शोषकों की शोषण प्रवृत्ति बढ़ी है। हृदय के मन्तव्य–मार डाले ! ...../ बुद्धि का भाल ही फोड़ दिया, तर्कों के हाथ उखाड़ दिये, जम गया, जाम हुए, फँस गये,!! विवेक बघार डाला स्वार्थों के तेल में आदर्श खा गये !.....ज्यादा लिया और दिया बहुत–बहुत कम/मर गया देश, अरे, जीवित रह गये तुम.... ।'' जो स्वयं को मन से आदर्शवादी एवं सिद्धान्तवादी मानते है जिन्होंने शोषण व्यवस्था में आग में घी डालने जैसी भूमिका निभायी है उन पर भी कवि व्यंग करता है ''ओ मेरे आदर्शवादी मन, ओ मेरे सिद्धान्तवादी मन,''।

कवि में विषम परिस्थितियों को झेलते हुए दृढ़ संकल्प एवं इच्छा शक्ति भी है। वाचक अपनी अभिव्यक्ति पर असन्तोष जाहिर कर परमअभिव्यक्ति पर बल देता है। पुरानी परम्पराओं रूढ़ियों का त्याग तथा उच्च वर्ग एवं निम्न वर्ग का भेद समाप्त करने, सर्वहारा वर्ग के हितो की रक्षा, पूंजिपतियों के अत्याचार को खत्म करने के लिए वाचक के मन में फिर से आत्मविश्वास पैदा होता है तत्पश्चात वह ह संकल्प लेता है कि ''अब अभिव्यक्ति के सारे खतरे उठाने ही होंगे / ताड़ने होंगे ही मठ और गढ़ सब।'' अर्थात मनुष्य को अपने व्यक्तित्व से भय–पालन का त्याग करना होगा तथा खतरों से लड़ते हुए अपनी अभिव्यक्ति पानी ही होगीत्र। इसके लिए वाचक राह में आने वाली कठिनाइयों को झेलते हुए निरन्तर प्रयत्नशील रहता है और अपनी इसी अभिव्यक्ति की तलाश में निकल पड़ता है। ''इसीलिए में हर गली में / और हर सड़क पर / झाँक–झाँक देखता हू हर एक चेहरा, प्रत्येक गतिविधि / प्रत्येक चरित्र, वह हर एक आत्मा का इतिहास, हर एक देश व राजनैतिक परिस्थिति / प्रत्येक मानवीय स्वानुभूत आदर्श / विवेक प्रक्रिया, क्रियागत परिणति!! खोजता हूँ पठार....पहाड़..... समुन्दर/ जहाँ मिल सके मुझे / मेरी वह खोयी हुई /परम अभिव्यक्ति अनिवार/ आत्म–संमभवा।''

इस प्रकार स्पष्ट है कि 'अंधेरे में' कविता आधुनिक युग की कविताओं में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है तथा जीवन के वास्तविक अनुभूति के विभिन्न परतों को परतदर परत खोलती है और हमें ऐसी जगह पर ला खड़ा करती है जहां पुंजीवाद की चरम सीमा, वैभवपुर्ण समाज की जटिलता, सत्ता का दमन और आतंक मूर्त रूप में दिखाई देता है। इस कविता नायक गहन आत्मसंघर्ष के बाद सर्वहारा वर्ग के हितों के लिए स्वयं को समर्पित कर देता है। जिसके फलस्वरूप वह समाज को एक नयी दिशा देने के लिए क्रांति कर बैठता है। इस कविता को और भी प्रभावपूर्ण बनाने का काम फैंटेसी, बिम्ब, प्रतीक, शब्द, ध्वनियां

आदि करते है। उपरोक्त तथ्यों की पुष्टि शमशेर के 'चांद का मुह टेढ़ा है' की भूमिका से हो जाती है जिसमें शमशेर मुक्तिबोध के काव्य को आधुनिक सन्दर्भों में देखते हुए कहते है कि ''यह कविता देश के आधुनिक जन इतिहास का – स्वतंत्रतापूर्व और पश्चात का दहकता इस्पाती दस्तावेज़ है। इसमें अजब और अशुद्ध रूप से व्यक्ति और जन का एकीकरण है। देश की धरती, हवा, आकाश, देश की मुक्ति आकांक्षी नस नस इसमें फड़क रही है ....और भावनाओं के अनेक गुंफित स्तरों पर।'' इसे आधुनिक कविताओं में महत्वपुर्ण स्थान देते हुए कहते है'' उनके बिंब और प्रतीक, संकेत और संदर्भ, शब्द और ध्वनियां बड़ी विविध और गहरी गूँजे हमारी भावनाओं में भर जाते है इसमें मुक्तिबोध का कवि व्यक्तित्व बाल्ट हिवटमैन और मायकोवस्की के शिल्प शक्ति से टक्कर लेता है और अपनी ज़मीन पर अप्रतिहत और अद्वितीय रहता है.....।''[4] वास्तव में मुक्तिबोध में जिस प्रकार से जीवन की वास्तविक गहन अनुभूति देखने को मिलती है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है।

संदर्भ सूची

1. सेठी, सुमिता, अंधेरे में विभिन्न व्याख्याएं, परिदृश्य प्रकाशन, 6 दादी संतुक लेन, धोबी तालाब बम्बई–400002, प्रथम संस्करण 1996, पृ. सं. 11
2. सिंह, नामवर, कविता के नये प्रतिमान, दिल्लीः राजकमल प्रकाशन, संस्करण 1974 पृ सं.267–68
3. वाजपेयी, अशोक, फिलहाल, दिल्लीः राजकमल प्रकाशन, संस्करण 1970 पृ. सं 109–11
4. सिंह, शमशेर बहादुर, चांद का मुंह टेढ़ा है की भूमिका में, पृ. सं 26
5. मुक्तिबोध, गजानन माधव, चाँद का मुँह टेढ़ा है, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 18 इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड नयी दिल्ली–110003 सोलहवा संस्करण 2004